Shane Hafize Millat (Hindi)

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

शाने ह़ाफ़िज़े मिल्लत

सफ़ह़ात 19

- दादा हुज़ूर की पेश गोई 02
- वक़्त की पाबन्दी 08
- गिरती हुई छत को रोक दिया 14
- ह़ाफ़िज़े मिल्लत का मक़ाम 17
- उ़लमाए किराम की नज़र में

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**शाने ह़ाफ़िज़े मिल्लत** رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

शाने ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला ''शाने ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ'' पढ़ या सुन ले उस को अपने नेक बन्दे ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की बरकतें अ़त़ा कर और उस की बे ह़िसाब बख़्शिश फ़रमा। اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के अख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار، ج ۱ ص ۴۲۲ حدیث ۳۱۴۹، دار الفکر بیروت)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

पीरे त़रीक़त, रहबरे शरीअ़त, क़ाइदे क़ौमो मिल्लत, मुक़्तदाए अहले सुन्नत, उस्ताज़ुल उ़लमा, हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस मुरादआबादी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का नाम ''अ़ब्दुल अ़ज़ीज़'' और लक़ब ''ह़ाफ़िज़े मिल्लत'' है जब कि सिल्सिलए नसब अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन ह़ाफ़िज़ ग़ुलाम नूर बिन मौलाना अ़ब्दुर्रह़ीम رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِم है।

विलादते बा सआ़दत

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने 1312 हि. ब मुत़ाबिक़ 1894 ई. क़स्बा

भोजपूर (ज़िलअ़ मुरादआबाद, यूपी हिन्द) में बरोज़ पीर सुब्ह़ के वक़्त इस आ़लमे रंगो बू में जल्वा फ़रमाया।

दादा हुज़ूर की पेशीन गोई

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के दादा मौलाना अ़ब्दुर्रह़ीम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने देहली के मश्हूर मुह़द्दिस शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की निस्बत से आप का नाम अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रखा ताकि मेरा येह बच्चा भी आ़लिमे दीन बने। (मुख़्तसर सवानेह़े ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 18, ब तग़य्युर, वग़ैरा, अल मज्मऊ़ल इस्लामी, मुबारक पूर हिन्द)

वालिदे माजिद की ख़्वाहिश

अब्बूजान ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ ग़ुलाम नूर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की शुरूअ़ से येही तमन्ना थी कि आप एक आ़लिमे दीन की ह़ैसिय्यत से दीने मतीन की ख़िदमत सर अन्जाम दें लिहाज़ा भोजपूर में जब भी कोई बड़े आ़लिम या शैख़ तशरीफ़ लाते तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने साह़िब ज़ादे हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को उन के पास ले जाते और अ़र्ज़ करते हुज़ूर ! मेरे इस बच्चे के लिये दुआ़ फ़रमा दें।

(ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 53, मुलख़्ख़सन, अल मज्मऊ़ल इस्लामी, मुबारक पूर हिन्द)

ह़ाफ़िज़े मिल्लत के वालिदैन

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के अब्बूजान अह़कामे शर्अ़ के पाबन्द, मुत्तबेए़ सुन्नत, बा अ़मल ह़ाफ़िज़ और आ़शिक़े क़ुरआन थे। उठते बैठते, चलते फिरते क़ुरआने मजीद की तिलावत ज़बान पर जारी रहती ह़िफ़्ज़े क़ुरआन इस क़दर मज़बूत़ था कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه "बड़े ह़ाफ़िज़ जी" के लक़ब से मश्हूर थे, बच्चों की उ़म्र सात साल होते ही उन्हें नमाज़ रोज़े की ताकीद करते थे। कोई मिलने आता तो ख़ूब मेहमान नवाज़ी किया करते, अगर

मेहमान नमाज़ का पाबन्द होता तो रात ठहरा लेते वरना सिर्फ़ खाना खिला कर रुख़्सत कर देते, जब ह़ज व ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए और वापसी पर अख़्राजात ख़त्म हो गए तो किसी के आगे हाथ न फैलाया बल्कि मेह़नत मज़दूरी कर के अख़्राजात जम्अ़ किये और 9 माह बा'द तशरीफ़ लाए। तक़्रीबन 100 साल उ़म्र पा कर इस दारे फ़ानी से आ़लमे जाविदानी (या'नी इस फ़ानी दुन्या से हमेशगी वाले आ़लम) की त़रफ़ कूच कर गए। (ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 54, मुलख़्ख़सन)

आप की अम्मीजान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْها नमाज़ रोज़े की बड़ी पाबन्दी फ़रमातीं। मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही और ईसार का ऐसा जज़्बा अ़ता हुवा था कि घर में ग़ुरबत होने के बा वुजूद पड़ोसियों का बहुत ख़याल रखा करतीं, अक्सर अपना खाना एक बेवा पड़ोसन को खिला देतीं और ख़ुद भूकी रह जातीं। (ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 55, मुलख़्ख़सन)

इब्तिदाई ता'लीम और ह़िफ़्ज़े क़ुरआन

ह़ुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इब्तिदाई ता'लीम नाज़िरा और ह़िफ़्ज़े क़ुरआन की तक्मील अब्बूजान ह़ाफ़िज़ ग़ुलाम नूर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से की। इस के इ़लावा उर्दू की चार जमाअ़तें वत़ने अ़ज़ीज़ भोजपूर में पढ़ीं, जब कि फ़ारसी की इब्तिदाई क़ुतुब भोजपूर और पीपल साना (ज़िलअ़ मुरादआबाद) से पढ़ कर घरेलू मसाइल की वज्ह से सिल्सिलए ता'लीम मौक़ूफ़ किया और फिर क़स्बा भोजपूर में ही मद्रसा ह़िफ़्ज़ुल क़ुरआन में मुदर्रिस और बड़ी मस्जिद में इमामत के फ़राइज़ सर अन्जाम दिये। (मुख़्तसर सवानेह़े ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 22, मुलख़्ख़सन)

ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने 1339 हि. को तक़्रीबन 27 साल की उ़म्र में "जामिआ़ नईमिय्या" मुरादआबाद में दाख़िला ले लिया और

तीन साल तक ता'लीम हासिल की। मगर अब इल्म की प्यास शिद्दत इख़्तियार कर चुकी थी जिसे बुझाने के लिये किसी इल्मी समुन्दर की तलाश थी। (मुख़्तसर सवानेहे हाफ़िज़े मिल्लत, स. 24, मुलख़्ख़सन वग़ैरा)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तहसीले इल्म के लिये उम्र की कोई क़ैद नहीं, यक़ीनन इल्मे दीन हासिल करना खुश नसीबों का हिस्सा है, अगर मुम्किन हो तो दर्से निज़ामी (आलिम कोर्स) में दाखिला ले कर खुलूसे निय्यत के साथ इल्मे दीन हासिल कीजिये और इस की ख़ूब ख़ूब बरकतें लूटिये। अगर येह न हो सके तो आशिक़ाने रसूल की मदनी तहरीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये कि येह भी इल्मे दीन हासिल करने और बे शुमार बरकतें पाने का ज़रीआ है। आइये ! इल्मे दीन का जज़्बा पैदा करने के लिये एक हदीसे पाक सुनिये और हुसूले इल्मे दीन में मशगूल हो जाइये।

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जो इल्म हासिल करे और उसे पा भी ले तो उस के लिये दोहरा सवाब है और जो न पा सके उस के लिये एक सवाब है।

(مشکاۃ المصابیح ج ا ص ۶۸ حدیث ۲۵۳، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दोहरे सवाब की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं : एक इल्म तलब करने का, दूसरा पा लेने का क्यूं कि येह दोनों इबादतें हैं और एक सवाब की वज़ाहत में इर्शाद फ़रमाते हैं : या तो ज़मानए तालिबे इल्मी में मर जाए (कि) तक्मील का मौक़अ़ न मिले या उस का ज़ेहन काम न करे मगर वोह लगा रहे तब भी सवाब पाएगा।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 218, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़)

सदरुश्शरीअ़ह की शफ़्क़त

शव्वालुल मुकर्रम 1342 हि. में ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने चन्द हम अस्बाक़ दोस्तों के साथ अजमेर शरीफ़ पहुंचे, उन में इमामुन्नह़्व ह़ज़रत अ़ल्लामा गुलाम जीलानी मेरठी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه भी शामिल थे। चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने सब को जामिआ़ मुईनिय्या में दाखि़ला दिलवा दिया, तमाम दर्सी किताबें दीगर मुदर्रिसीन पर तक़्सीम हो गईं मगर ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अज़ राहे शफ़्क़त अपनी मसरूफ़िय्यात से फ़ारिग़ हो कर **तहज़ीब** और **उसूलुश्शाशी** का दर्स दिया करते। इल्मे मन्तिक़ की किताब ''ह़म्दुल्लाह'' तक ता'लीम ह़ासिल करने के बा'द ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने मआ़शी परेशानी और ज़ाती मसरूफ़िय्यत की वज्ह से मज़ीद ता'लीम जारी न रखने का इरादा किया और दौरए ह़दीस शरीफ़ पढ़ने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने शफ़्क़त से फ़रमाया : आस्मान ज़मीन बन सकता है, पहाड़ अपनी जगह से हिल सकता है, लेकिन आप की एक किताब भी रह जाए ऐसा मुम्किन नहीं। चुनान्चे आप ने अपना इरादा मुल्तवी किया और पूरी दिल जम्ई के साथ सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की खि़दमत में रह कर मनाज़िले इल्म तै़ करते रहे, बिल आखि़र उस्तादे मोह़तरम क़िब्ला सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की निगाहे फ़ैज़ से 1351 हि. ब मुत़ाबिक़ 1932 ई. में दारुल उ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ से दौरए ह़दीस मुकम्मल किया और दस्तार बन्दी हुई।

(ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 232, मुलख़्ख़सन वग़ैरा)

मुबारक पूर में आमद

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه 29 शव्वालुल मुकर्रम 1352 हि. ब मुत़ाबिक़ 14 जनवरी 1934 ई. को मुबारक पूर पहुंचे और मद्रसा अशरफ़िय्या

मिस्बाहुल उ़लूम (वाक़ेअ़ महल्ला पुरानी बस्ती) में तदरीसी ख़िदमात में मसरूफ़ हो गए। अभी चन्द माह ही गुज़रे थे कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के त़र्ज़े तदरीस और इल्मो अ़मल के चरचे आ़म हो गए और तिश्नगाने इल्म का एक सैलाब उमंड आया जिस की वज्ह से मद्रसे में जगह कम पड़ने लगी और एक बड़ी दर्सगाह की ज़रूरत महसूस हुई। चुनान्चे आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी जिद्दो जुह्द से 1353 हि. में दुन्याए इस्लाम की एक अ़ज़ीम दर्सगाह (दारुल उ़लूम) की ता'मीर का आग़ाज़ गोला बाज़ार में फ़रमाया जिस का नाम सुल्त़ानुत्तारिकीन ह़ज़रत मख़्दूम सय्यिद अशरफ़ जहांगीर सिमनानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की निस्बत से "दारुल उ़लूम अश्रफ़िय्या मिस्बाहुल उ़लूम" रखा गया। (सवानेह़े ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 39 ता 40, वग़ैरा)

हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه शव्वाल 1361 हि. में कुछ मसाइल की बिना पर इस्ति'फ़ा दे कर जामिआ़ अ़रबिय्या नागपूर तशरीफ़ ले गए, चूंकि आप मालियात की फ़राहमी और ता'लीमी उमूर में बड़ी महारत रखते थे, लिहाज़ा आप के दारुल उ़लूम अश्रफ़िय्या से चले जाने के बा'द वहां की ता'लीमी और मआ़शी ह़ालत इन्तिहाई ख़स्ता हो गई तो ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के हुक्मे ख़ास पर 1362 हि. में नागपूर से इस्ति'फ़ा दे कर दोबारा मुबारक पूर तशरीफ़ ले आए और ता दमे ह़यात दारुल उ़लूम अश्रफ़िय्या मुबारक पूर से वाबस्ता रह कर तदरीसी व दीनी ख़िदमात की अन्जाम देही में मश्ग़ूल रहे। ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की कोशिशों से मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत मुफ़्ती मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के दस्ते मुबारक से 1392 हि. ब मुत़ाबिक़ 1972 ई. में मुबारक पूर में वसीअ़ क़ित़्अ़ए अर्ज़ पर (या'नी ज़मीन के एक बड़े ह़िस्से पर) अल जामिअ़तुल अश्रफ़िय्या (अ़रबी यूनीवर्सिटी) का संगे बुन्याद रखा गया। (ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 650 ता 700, मुल्तक़त़न)

उस्ताद का अदब

हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه हुज़ूर सदरुश्शरीअह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की बारगाह में हमेशा दो ज़ानू बैठा करते, अगर सदरुश्शरीअह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ज़रूरतन कमरे से बाहर तशरीफ़ ले जाते तो त़लबा खड़े हो जाते और उन के जाने के बा'द बैठ जाते और जब वापस तशरीफ़ लाते तो अदबन दोबारा खड़े होते लेकिन हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस पूरे वक़्फ़े में खड़े ही रहते और ह़ज़रते सदरुश्शरीअह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के मस्नदे तदरीस पर तशरीफ़ फ़रमा होने के बा'द ही बैठा करते ।

(ह़याते हाफ़िज़े मिल्लत, स. 70, मुलख़्ख़सन)

किताबों का अदब

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه क़ियाम गाह पर होते या दर्सगाह में, कभी कोई किताब लैट कर या टेक लगा कर न पढ़ते न पढ़ाते बल्कि तक्या या तिपाई (डेस्क) पर रख लेते, क़ियाम गाह से मद्रसा या मद्रसे से क़ियाम गाह कभी कोई किताब ले जानी होती तो दाह्ने हाथ में ले कर सीने से लगा लेते, किसी त़ालिबे इ़ल्म को देखते कि किताब हाथ में लटका कर चल रहा है तो फ़रमाते : किताब जब सीने से लगाई जाएगी तो सीने में उतरेगी और जब किताब को सीने से दूर रखा जाएगा तो किताब भी सीने से दूर होगी । (ह़याते हाफ़िज़े मिल्लत, स. 66, ब तग़य्युर)

क़ुरआने पाक का अदब

एक मर्तबा छुट्टी के बा'द कई त़लबा दारुल उ़लूम अहले सुन्नत अशरफ़िय्या की सीढ़ियों के पास हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की ज़ियारत व मुलाक़ात के लिये मुन्तज़िर खड़े थे, आप तशरीफ़ लाए तो सब त़लबा पासे अदब (अदब का ख़याल) रखते हुए आप के पीछे पीछे चल पड़े । अचानक आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने एक त़ालिबे इ़ल्म से फ़रमाया :

आप आगे आगे चलें । येह सुन कर वोह ताालिबे इल्म झिजके तो फ़रमाया : आप के पास कुरआन शरीफ़ है, इस लिये आगे चलने को कह रहा हूं । (ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 66)

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा बे अदबों से और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

(वसाइले बख़्शिश, स.193, मक्तबतुल मदीना)

त़लबा पर शफ़्क़त

हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رحمۃ اللہ علیہ इल्मे दीन के त़लब गारों से बे पनाह मह़ब्बत फ़रमाया करते थे, त़लबा को किसी ग़लत़ी पर मद्रसे से निकाल देने को सख़्त ना पसन्द करते और फ़रमाते : मद्रसे से त़लबा का इख़्राज (या'नी निकाल देना) बिल्कुल ऐसा ही है जैसे कोई बाप अपने किसी बेटे को आ़क़ (अ़लाह़दा) कर दे या जिस्म के किसी बीमार उ़ज़्व को काट कर अलग कर दे, मज़ीद फ़रमाते : इन्तिज़ामी मसालेह़ (या'नी फ़वाइद) के पेशे नज़र अगर्चे येह शर्अ़न मुबाह़ है, लेकिन मैं इसे भी अब्ग़ज़ मुबाह़ात (या'नी जाइज़ मुआ़मलात में सख़्त ना पसन्द बातों) से समझता हूं । (ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 181)

वक़्त की पाबन्दी

हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رحمۃ اللہ علیہ वक़्त के इन्तिहाई पाबन्द और क़द्रदान थे, हर काम अपने वक़्त पर किया करते, मसलन मस्जिदे मह़ल्ला में पाबन्दिये वक़्त के साथ बा जमाअ़त नमाज़ अदा फ़रमाते, तदरीस के अवक़ात में अपनी ज़िम्मेदारी को ब हुस्नो ख़ूबी अन्जाम देते, छुट्टी के बा'द क़ियाम गाह पर लौटते और खाना खा कर कुछ देर क़ैलूला (या'नी दो पहर के वक़्त कुछ देर के लिये आराम) ज़रूर फ़रमाते क़ैलूला का वक़्त हमेशा यक्सां रहता, चाहे एक वक़्त का मद्रसा हो या दोनों वक़्त का, ज़ोहर के मुक़र्ररा वक़्त पर बहर ह़ाल उठ जाते और बा जमाअ़त नमाज़

अदा करने के बा'द अगर दूसरे वक़्त का मद्रसा होता तो मद्रसे तशरीफ़ ले जाते वरना किताबों का मुत़ालआ़ फ़रमाते या किसी किताब से दर्स देते या फिर ह़ाजत मन्दों को ता'वीज़ अ़त़ा फ़रमाते, शुरूअ़ शुरूअ़ में अ़स्र की नमाज़ के बा'द सैरो तफ़रीह़ के लिये आबादी से बाहर तशरीफ़ ले जाते मगर उस वक़्त भी त़लबा आप के हमराह होते जो इ़ल्मी सुवालात करते और तशफ़्फ़ी भरे जवाबात पाते, अगर किसी की इ़यादत के लिये जाना होता तो अक्सर अ़स्र के बा'द ही जाया करते, क़ब्रिस्तान से गुज़रते हुए अक्सर सड़क पर खड़े हो कर क़ब्रों पर फ़ातिह़ा और ईसाले सवाब करते। मग़रिब की नमाज़ के बा'द खाना खाते और फिर अपने आंगन (सह़न) में चेहल क़दमी फ़रमाते, इ़शा की नमाज़ के बा'द किताबों का मुत़ालआ़ करते और साथ साथ मुक़ीम त़लबा की देखभाल भी करते रहते कि वोह मुत़ालए़ में मसरूफ़ हैं या नहीं। उ़मूमन ग्यारह बजे तक सो जाते और तहज्जुद के लिये आख़िरे शब में उठते, तहज्जुद पढ़ने के बा'द भी कुछ देर के लिये सो जाते, रात में चाहे कितनी ही देर जागना पड़ता फ़ज्र कभी क़ज़ा न होती। (ह़यातेह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 79 ता 80, मुलख़्ख़सन)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि हम अपने वक़्त की क़द्र करें और सुस्ती उड़ा कर दिन भर के कामों का एक जद्वल बनाएं ताकि हर काम वक़्त पर करने के आ़दी बन सकें। इसी ज़िम्न में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : कोशिश कीजिये कि सुब्ह़ उठने के बा'द से ले कर रात सोने तक सारे कामों के अवक़ात मुक़र्रर हों, मसलन इतने बजे तहज्जुद, इ़ल्मी मशाग़िल, मस्जिद में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़, इश्राक़, चाश्त, नाश्ता, कस्बे मआ़श, दो पहर का खाना, घरेलू मुआ़मलात, शाम के मशाग़िल, अच्छी सोह़बत (अगर येह मुयस्सर न हो तो तन्हाई ब दरजहा बेहतर है), इस्लामी भाइयों से दीनी ज़रूरिय्यात के तह़्त मुलाक़ात वग़ैरा के अवक़ात मुतअ़य्यन कर लिये जाएं, जो इस के आ़दी नहीं हैं उन के

लिये हो सकता है शुरूअ़ में कुछ दुश्वारी पेश आए। फिर जब आ़दत बन जाएगी तो इस की बरकतें ख़ुद ही ज़ाहिर हो जाएंगी।

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सुन्नत से महब्बत

हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की पूरी ज़िन्दगी मुअ़ल्लिमे काएनात صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरते पाक का नमूना थी, चुनान्चे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ अपनी किताब "नेकी की दा'वत" सफ़ह़ा 213 पर इर्शाद फ़रमाते हैं : ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ अपने हर अ़मल में सुन्नत का बहुत ज़ियादा ख़याल रखते थे। एक बार ह़ज़रत के दाएं पाउं में ज़ख़्म हो गया, एक साह़िब दवा ले कर पहुंचे और कहा : ह़ज़रत ! दवा ह़ाज़िर है। जाड़े (या'नी सर्दियों) का ज़माना था ह़ज़रत मोज़ा पहने हुए थे, आप ने पहले बाएं (या'नी उलटे) पाउं का मोज़ा उतारा, वोह साह़िब बोल पड़े : ह़ज़रत ! ज़ख़्म तो दाह़ने (या'नी सीधे) पाउं में है ! आप ने फ़रमाया : बाएं (या'नी उलटे) पाउं का पहले उतारना सुन्नत है।

एक और वाक़िआ़ नक़्ल करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत की उ़म्र शरीफ़ 70 साल से मुतजाविज़ (ज़ियादा) हो चुकी थी, ट्रेन से सफ़र कर रहे थे, जिस बर्थ पर तशरीफ़ फ़रमा थे, इत्तिफ़ाक़ से उस पर एक डॉक्टर साह़िब भी बैठे थे, डॉक्टर साह़िब ने सिल्सिलए कलाम शुरूअ़ किया तो आप की जलालते इ़ल्मी से बहुत मुतअस्सिर हुए और बार बार आप की त़रफ़ ह़ैरत से देखते रहे, दौराने गुफ़्तगू डॉक्टर साह़िब ने तअ़ज्जुब का इ़ज़्हार करते हुए कहा : मौलाना साह़िब ! मैं आंखों का डॉक्टर हूं, मैं देख रहा हूं कि इस उ़म्र में भी आप की बीनाई में कोई फ़र्क़ नहीं, बल्कि आप की आंखों में बच्चों की आंखों जैसी चमक है, मुझे बताइये कि इस के लिये आख़िर क्या चीज़ इस्ति'माल करते हैं ? फ़रमाया :

डॉक्टर साहि़ब ! मैं कोई ख़ास दवा वग़ैरा तो इस्ति'माल नहीं करता, हां एक अ़मल है जिसे मैं बिला नाग़ा करता हूं, रात को सोने के वक़्त सुन्नत के मुत़ाबिक़ सुरमा इस्ति'माल करता हूं और मेरा यक़ीन है कि इस अ़मल से बेहतर आंखों के लिये दुन्या की कोई दवा नहीं हो सकती ।

ह़ाफ़िज़े मिल्लत की सादगी और ह़या

आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ की ज़िन्दगी निहायत सादा और पुर सुकून थी कि जो लिबास ज़ेबे तन फ़रमाते वोह मोटा सूती कपड़े का होता, कुरता कली दार लम्बा होता, पाजामा टख़्नों से ऊपर होता, सरे मुबारक पर टोपी होती जिस पर इ़मामा हर मौसिम में सजा होता, शेरवानी भी ज़ेबे तन फ़रमाया करते, चलते वक़्त हाथ में अ़सा होता । रास्ता चलते तो निगाहें झुका कर चलते और फ़रमाते : मैं लोगों के उ़यूब नहीं देखना चाहता। घर में होते तो भी ह़या को मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रखते, साहि़ब ज़ादियां बड़ी हुईं तो घर के मख़्सूस कमरे में ही आराम फ़रमाते, घर में दाख़िल होते वक़्त छड़ी ज़मीन पर ज़ोर से मारते ताकि आवाज़ पैदा हो और घर के लोग ख़बरदार हो जाएं, ग़ैर मह़रम औ़रतों को कभी सामने न आने देते । (ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 175, 179, वग़ैरा)

सिर्फ़ सूखी रोटी खा कर पानी पी लिया

अन्दरूने ख़ाना आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ की सादगी और क़नाअ़त का येह ह़ाल था कि एक बार आप की बड़ी साहि़ब ज़ादी ने रात के खाने में आप के सामने डलिया (या'नी छोटी टोकरी) में रोटी रखी और बा'द में दाल का पियाला ला कर क़रीब ही रख दिया, रोशनी दूर और कम थी लिहाज़ा आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ दाल को न देख सके सिर्फ़ सूखी रोटी खा कर पानी पी लिया और फिर खाने के बा'द की दुआ़ पढ़ने लगे, साहि़ब ज़ादी ने अ़र्ज़ की : अब्बाजान ! आप ने दाल नहीं खाई ? आप ने तअ़ज्जुब

से पूछा : अच्छा ! दाल भी है, मैं ने समझा आज सिर्फ़ रोटी ही है ।

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! सद हज़ार आफ़रीं ह़ाफ़िज़े मिल्लत जैसी मुबारक हस्तियों पर जिन्हों ने रिज़ाए इलाही की ख़ातिर दुन्यावी आ़रिज़ी लज़्ज़तों को ठुकराया और आराइशो आसाइश को छोड़ कर सादगी व आ़जिज़ी इख़्तियार की । **अल्लाह** पाक इन पाकीज़ा हस्तियों के सदक़े हमें भी आ'माले सालिह़ा पर इस्तिक़ामत और हर ह़ाल में अपनी रिज़ा पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

हमेशा निगाहों को अपनी झुका कर करूं ख़ाशिआ़ना दुआ़ या इलाही
मैं मिट्टी के सादा से बरतन में खाऊं चटाई का हो बिस्तरा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 85)

हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ बचपन ही से फ़राइज़ व सुनन के पाबन्द थे और जब से बालिग़ हुए नमाज़े तहज्जुद शुरूअ़ फ़रमा दी जिस पर ता ह़यात अ़मल रहा, सलातुल अव्वाबीन व दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ वग़ैरा बिला नाग़ा पढ़ते यहां तक कि आख़िरी अय्याम में दूसरों से पढ़वा कर सुनते रहे, रोज़ाना सुब्ह़ सूरए यासीन व सूरए यूसुफ़ की तिलावत का इल्तिज़ाम फ़रमाते जब कि जुमुआ़ के दिन सूरए कह्फ़ की तिलावत मा'मूल में शामिल थी । आप फ़रमाया करते कि अ़मल इतना ही करो जितना बिला नाग़ा कर सको ।

(ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 79, मुलख़्ख़सन)

किफ़ायत शिआ़री और सख़ावत

ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ अपनी ज़ात पर ख़र्च करने के बजाए दूसरों पर ख़र्च कर के ख़ुशी मह़सूस करते थे, आप की सीरते मुबारका का मुत़ालआ़ करने से येह ह़दीसे पाक बे इख़्तियार ज़बान पर आ जाती है : لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى يُحِبَّ لِاَخِيْهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهٖ या'नी तुम में कामिल ईमान

वाला वोह है जो अपने भाई के लिये भी वोही चीज़ पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करता है। (بخاری ج ۱ ص ۱۶ حدیث ۱۳، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

जिन पर ह़ाफ़िज़े मिल्लत का अब्रे करम बरसा उन का दाएरा बहुत वसीअ़ था, बा'दे विसाल आप की डाक वाली एक पुरानी गठड़ी मिली जिस में मुल्क भर से आए हुए ख़ुतूत़ थे। उन में मुतअ़द्दिद सफ़ेद पोश उ़लमा और ख़ुद्दामे दीन की ऐसी तह़रीरें और तशक्कुर नामे (या'नी शुक्रिय्या के ख़ुतूत़, Letters) थे जिन की ह़ाफ़िज़े मिल्लत मदद फ़रमाया करते थे। (ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 179, मुलख़्ख़सन)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه यक़ीनन एक बा अ़मल आ़लिमे दीन थे मगर यहां येह बात याद रखिये कि अगर किसी आ़लिम के मुस्तह़ब्बात व नवाफ़िल वग़ैरा में ब ज़ाहिर कमी नज़र आए तो इस का येह मत़लब नहीं है कि वोह क़ाबिले ता'ज़ीम और लाइक़े ख़िदमत नहीं। चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उ़लमाए किराम की शान बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : क़ुरआने अ़ज़ीम ने इन सब को अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का वारिस क़रार दिया ह़त्ता कि बे अ़मल या'नी फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी करें मगर दीगर नेक कामों, मुस्तह़ब्बात व नवाफ़िल में सुस्ती करें, ऐसे उ़लमा को भी वारिस क़रार दिया जब कि वोह सह़ीह़ अ़क़ाइद रखते हों और सीधे रास्ते की त़रफ़ बुलाते हों, येह क़ैद इस लिये है कि जो अ़क़ाइद में सह़ीह़ नहीं और दूसरों को ग़लत़ अ़क़ाइद की त़रफ़ बुलाने वाला है वोह ख़ुद गुमराह और दूसरों को गुमराह करने वाला है, ऐसा आदमी नबी عَلَيْهِ السَّلَام का वारिस नहीं शैत़ान का नाइब होता है, लिहाज़ा सिर्फ़ सह़ीह़ अ़क़ाइद वाला और इस की त़रफ़ दूसरों को बुलाने वाला अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का वारिस है अगर्चे बे अ़मल हो। (शरीअ़त व त़रीक़त, स. 14, मक्तबतुल मदीना)

सारे सुन्नी आ़लिमों से तू बना कर रख सदा   कर अदब हर एक का, होना न तू इन से जुदा
मुझ को ऐ अ़त्तार सुन्नी आ़लिमों से प्यार है   اِنْ شَآءَالله दो जहां में मेरा बेड़ा पार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 646)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب   صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बिग़ैर पेट्रोल के गाड़ी चल पड़ी

एक मर्तबा सफ़र से वापसी पर गाड़ी का पेट्रोल ख़त्म हो गया, ड्राइवर ने अ़र्ज़ की : अब गाड़ी आगे नहीं जा सकती, येह सुन कर दीगर रुफ़क़ा परेशान हो गए मगर उस वक़्त भी ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने पुर ए'तिमाद अन्दाज़ में फ़रमाया : ले चलो ! गाड़ी चलेगी اِنْ شَآءَالله, येह फ़रमान सुनते ही ड्राइवर ने चाबी घुमाई तो गाड़ी चल पड़ी और ऐसी चली कि रास्ते भर कहीं न रुकी। (ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 212, मुलख़्ख़सन)

गिरती हुई छत को रोक दिया

नेकी की दा'वत सफ़ह़ा 213 पर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की एक करामत तह़रीर है : अल जामिअ़तुल अशरफ़िय्या के बानी मबानी ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बड़े पाए के बुज़ुर्ग थे। सवानेह़ निगारों ने आप की कई करामात बयान की हैं। उन में एक येह भी है, जामेअ़ मस्जिद मुबारक शाह पहले मुख़्तसर ही थी और बोसीदा भी हो गई थी, आबादी की वुस्अ़त के लिह़ाज़ से मस्जिद का वसीअ़ होना भी ज़रूरी था, बहर ह़ाल पुरानी मस्जिद शहीद कर के नई बुन्यादें भरी गईं और मस्जिद की तौसीअ़ का काम शुरूअ़ हुवा। मुबारक पूर के मुसल्मानों ने बड़ी दिलचस्पी और लगन के साथ इस ता'मीर में भी ह़िस्सा लिया, ह़ज़रत ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस काम के भी रहनुमा और सरबराह थे, ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने जामेअ़ मस्जिद के लिये पूरी तवज्जोह और मेह़नत से चन्दे की फ़राहमी

की, मुबारक पूर में काफ़ी जोशो ख़रोश था, ग़ुरबत के बा वुजूद मुसल्मान अपनी दीनी ह़मिय्यत का पूरा पूरा सुबूत दे रहे थे, मर्दों ने अपनी कमाई और औ़रतों ने अपने ज़ेवरात वग़ैरा से इमदाद की। छत पड़ने के बा'द ह़ाजी मुह़म्मद उ़मर निहायत परेशानी के आ़लम में दौड़ते हुए ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के पास आए और कहा : ह़ाफ़िज़ साह़िब ! जामेअ़ मस्जिद की छत नीचे आ रही है, अब क्या होगा ! ह़ाजी साह़िब येह कहते कहते रो पड़े। ह़ज़रत ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़ौरन उठे, वुज़ू किया और ह़ाजी साह़िब के साथ घर से बाहर निकले और अपने पड़ोसी ख़ान मुह़म्मद साह़िब को हमराह लिया, जामेअ़ मस्जिद पहुंच कर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ते हुए लकड़ी की चन्द बल्लियां लगा दीं (या'नी लम्बे बांस या लकड़ी के थम लगा दिये)। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ ! छत न सिर्फ़ बराबर और दुरुस्त हो गई, बल्कि आज देखिये तो येह पता भी न लग सकेगा कि किस ह़िस्से की छत झुक रही थी।

ह़ाफ़िज़े मिल्लत की दीनी ख़िदमात

ह़ुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ एक बेहतरीन मुदर्रिस, मुसन्निफ़, मुनाज़िर और मुन्तज़िमे आ'ला थे आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का सब से अ़ज़ीम कारनामा अल जामिअ़तुल अश्रफ़िय्या मुबारक पूर (ज़िलअ़ आ'ज़म गढ़ यूपी हिन्द) का क़ियाम है जहां से फ़ारिग़ुत्तह़सील उ़लमा हिन्द की सर ज़मीन से ले कर एशिया, यूरोप व अमरीका और अफ़्रीक़ा के मुख़्तलिफ़ ममालिक में दीने इस्लाम की सर बुलन्दी और मस्लके आ'ला ह़ज़रत की तरवीजो इशाअ़त में मसरूफ़े अ़मल हैं।

(ह़यातेह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 533, मुलख़्ख़सन)

ह़ाफ़िज़े मिल्लत शख़्सिय्यत साज़ थे

आप एक शफ़ीक़ और मेह़रबान बाप की त़रह़ त़लबा की

ज़रूरिय्यात और ता'लीमो तरबियत के साथ साथ उन की शख़्सिय्यत को भी निखारा करते थे चुनान्चे रईसुल क़लम ह़ज़रते अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी رحمۃ اللہ علیہ इर्शाद फ़रमाते हैं : उस्ताद शागिर्द का तअ़ल्लुक़ आ़म तौ़र पर ह़ल्क़ए दर्स तक मह़दूद होता है, लेकिन अपने तलामिज़ा के साथ ह़ाफ़िज़े मिल्लत के तअ़ल्लुक़ात का दाएरा इतना वसीअ़ है कि पूरी दर्सगाह इस के एक गोशे में समा जाए, येह इन्ही के क़ल्बो नज़र की बे इन्तिहा वुस्अ़त और इन्ही के जिगर का बे पायां ह़ौसला था कि अपने ह़ल्क़ए दर्स में दाख़िल होने वाले त़ालिबे इ़ल्म की बे शुमार ज़िम्मेदारियां वोह अपने सर लेते थे, त़ालिबे इ़ल्म दर्सगाह में बैठे तो किताब पढ़ाएं, बाहर रहे तो अख़्लाक़ व किरदार की निगरानी करें, मजलिसे ख़ास में शरीक हो तो एक आ़लिमे दीन के मह़ासिन व औसाफ़ से रू शनास फ़रमाएं, बीमार पड़े तो नुक़ूशो ता'वीज़ से उस का इ़लाज करें, तंगदस्ती का शिकार हो जाए तो माली कफ़ालत फ़रमाएं, पढ़ कर फ़ारिग़ हो तो मुलाज़मत दिलवाएं और मुलाज़मत के दौरान कोई मुश्किल पेश आए तो उस की भी उ़क़्दा कुशाई फ़रमाएं, त़ालिबे इ़ल्म की निजी ज़िन्दगी, शादी बियाह, दुख सुख से ले कर ख़ानदान तक के मसाइल ह़ल करने में तवज्जोह फ़रमाएं, त़ालिबे इ़ल्म ज़ेरे दर्स रहे या फ़ारिग़ हो कर चला जाए एक बाप की त़रह़ हर ह़ाल में सरपरस्त और कफ़ील रहें, येही है वोह जौहरे मुन्फ़रिद जिस ने ह़ाफ़िज़े मिल्लत को अपने अक़रान व मुआ़सिरीन के दरमियान एक मे'मारे ज़िन्दगी की हैसिय्यत से मुमताज़ और नुमायां कर दिया है। (ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 307, ब तग़य्युर)

आप की तसानीफ़

आप رحمۃ اللہ علیہ तह़रीर व तस्नीफ़ में भी कामिल महारत रखते थे आप ने मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर कुतुब तह़रीर फ़रमाईं जिन में से चन्द

के नाम येह हैं : (1) मआ़रिफ़े ह़दीस (अह़ादीसे करीमा का तरजमा और इस की आ़लिमाना तशरीह़ात का मज्मूआ़) (2) इर्शादुल क़ुरआन (3) अल मिस्बाहुल जदीद (येह रिसाला मक्तबतुल मदीना से ''ह़क़्क़ो बात़िल में फ़र्क़'' के नाम से शाएअ़ हो चुका है।) (4) इम्बाउल ग़ैब (इल्मे ग़ैब के उ़न्वान पर एक अछूता रिसाला) (5) फ़िर्क़ए नाजिया (एक इस्तिफ़्ता का जवाब) (6) फ़तावा अ़ज़ीज़िया (इब्तिदाअन दारुल उ़लूम अशरफ़िय्या के दारुल इफ़्ता से पूछे गए सुवालात के जवाबात का मज्मूआ़, ग़ैर मत़्बूआ़) (7) ह़ाशिया शर्हे मिरक़ात। (सवानेह़े ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 73, मुलख़्ख़सन)

ह़ाफ़िज़े मिल्लत के मल्फ़ूज़ात

(1) जिस्म की क़ुव्वत के लिये वरज़िश और रूह़ की क़ुव्वत के लिये तहज्जुद ज़रूरी है। (2) काम के आदमी बनो, काम ही आदमी को मुअ़ज़्ज़ज़ बनाता है। (3) एह़सासे ज़िम्मेदारी सब से क़ीमती सरमाया है। (4) तज़्यीए़ अवक़ात (वक़्त ज़ाएअ़ करना) सब से बड़ी मह़रूमी है।

(सवानेह़े ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 74 ता 76, मुल्तक़त़न)

बैअ़त व ख़िलाफ़त

ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه शैख़ुल मशाइख़ ह़ज़रत मौलाना शाह सय्यिद अ़ली हुसैन अशरफ़ी मियां किछौछवी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मुरीद और ख़लीफ़ा थे। उस्तादे मोह़तरम सदरुश्शरीअ़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से भी आप को ख़िलाफ़त व इजाज़त ह़ासिल हुई। (सवानेह़े ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 22, मुलख़्ख़सन)

ह़ाफ़िज़े मिल्लत का मक़ाम उ़लमाए किराम की नज़र में

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरी ज़िन्दगी में दो ही बा ज़ौक़ पढ़ने वाले मिले एक मौलवी सरदार अह़मद (या'नी मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه)

और दूसरे ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (या'नी ह़ाफ़िज़े मिल्लत मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ) । (ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 825)

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द अ़ल्लामा मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : इस दुन्या से जो लोग चले जाते हैं उन की जगह ख़ाली रहती है, ख़ुसूसन मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ जैसे जलीलुल क़द्र आ़लिम, मर्दे मोमिन, मुजाहिद, अ़ज़ीमुल मर्तबत शख़्सिय्यत और वली की जगह पुर होना बहुत मुश्किल है ।

(ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 824, ब तग़य्युर)

बीमारी में भी हुक़ूक़ुल्लाह की पासदारी

ह़ुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने दीने मतीन की ख़िदमत और सुन्निय्यत की आब्यारी के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त न दिन देखा न रात, चुनान्चे मुसल्सल काम और बहुत कम आराम की वज्ह से आप अ़लील (बीमार) हो गए, डॉक्टरों ने आराम की सख़्त ताकीद की मगर आप ने दर्सो तदरीस से कनारा न किया । रमज़ान शरीफ़ में अपने मकान पर तशरीफ़ ले गए मगर बीमारी के बा वुजूद एक रोज़ा भी तर्क न फ़रमाया, तरावीह़ में ख़त्मे क़ुरआन फ़रमाया और हर काम अपने वक़्त पर पूरा फ़रमाते रहे । (ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 805, मुलख़्ख़सन)

विसाले पुर मलाल

31 मई 1976 ई. तक़्रीबन शाम चार बजे देखने वालों को येह उम्मीद हो चली कि अब आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ जल्द ही सिह़्ह़त याब हो जाएंगे बल्कि रात दस बजे तक भी आप की त़बीअ़त में काफ़ी ह़द तक सुकून और सिह़्ह़त यावी के आसार देखे गए मगर ख़िलाफ़े उम्मीद आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ यकुम जुमादल उख़्रा 1396 हि. ब मुत़ाबिक़ 31 मई 1976 ई. रात ग्यारह बज कर पचपन मिनट पर दाइये अजल को लब्बैक कह (या'नी इन्तिक़ाल कर) गए,

اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن । (ह़याते ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 809, मुलख़्ख़सन, वग़ैरा)

आप की आख़िरी आराम गाह अल जामिअ़तुल अशरफ़िय्या मुबारक पूर के सह़्न में "क़दीम दारुल इक़ामह" के मग़रिबी जानिब और "अज़ीज़ुल मसाजिद" के शिमाल में वाक़ेअ़ है, हर साल इसी तारीख़े वफ़ात पर आप के उ़र्स का इन्इक़ाद भी होता है।

(सवानेहे ह़ाफ़िज़े मिल्लत, स. 58)

अल्लाह पाक हमें इन मुक़द्दस हस्तियों के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, **अल्लाह** पाक की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
विलादते बा सआ़दत	1	सिर्फ़ सूखी रोटी खा कर	
दादा हुज़ूर की पेशीन गोई	2	पानी पी लिया	11
वालिदे माजिद की ख़्वाहिश	2	किफ़ायत शिआ़री और सख़ावत	12
ह़ाफ़िज़े मिल्लत के वालिदैन	2	बिग़ैर पेट्रोल के गाड़ी चल पड़ी	14
इब्तिदाई ता'लीम और		गिरती हुई छत को रोक दिया	14
ह़िफ़्ज़े कुरआन	3	ह़ाफ़िज़े मिल्लत की दीनी ख़िदमात	15
सदरुश्शरीअ़ह की शफ़्क़त	5	ह़ाफ़िज़े मिल्लत शख़्सिय्यत साज़ थे	15
मुबारक पूर में आमद	5	आप की तसानीफ़	16
उस्ताद का अदब	7	ह़ाफ़िज़े मिल्लत के मल्फ़ूज़ात	17
किताबों का अदब	7	बैअ़त व ख़िलाफ़त	17
कुरआने पाक का अदब	7	ह़ाफ़िज़े मिल्लत का मक़ाम	
त़लबा पर शफ़्क़त	8	उ़लमाए किराम की नज़र में	17
वक़्त की पाबन्दी	8	बीमारी में भी	
सुन्नत से मह़ब्बत	10	हुक़ूक़ुल्लाह की पासदारी	18
ह़ाफ़िज़े मिल्लत की सादगी और ह़या	11	विसाले पुर मलाल	18

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नमाज़ में शिफ़ा है

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ बयान करते हैं कि एक बार मैं नमाज़ पढ़ कर सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठ गया, आप ने फ़रमाया : क्या तुझे पेट में दर्द है। अ़र्ज़ की : जी हां। फ़रमाया : उठो और नमाज़ पढ़ो क्यूं कि नमाज़ में शिफ़ा है।

(ابنِ ماجہ، ج4، ص98، حدیث: 3458)

978-969-722-021-2
01013110

فیضانِ مدینہ، محلّہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net